847

॥ श्रीगणेशाये नमः ॥

ॐ तन्मय मनः शिव संकल्पमस्तु

मुक्ति-पथ



एकदंत गजवदन चतुर्भुज गणनायक विघ्नेश।
जय-जय भव-भय-हर लम्बोदर मंगलमय देवेश॥
अहि-शशि-जटामुकुटधर शंकर गंगाधर भगवान।
जय-जय बाघ-भालुचर्माम्बरधर विश्वेश महान॥

मूल्य—नित्य नियम से पढ़ना एवं धर्म का प्रचार करना

सरस्वती वन्दना

कल्पना विहंग के लगा दे व्योमव्यापी पंख,
विश्व विशालता से विस्तृत विचार दे।
सारे वायुमण्डल से परिचय पाने हेतु,
स्वाँस की ससीमता को विशद प्रसार दे॥
हृदय-सितार के जो ढीले पड़े तार उन्हें,
चाव से सुधार दे, नवीन झंकार दे।
मातृवत् प्यार दे, पसार दे दया के हाथ,
सारे कार्य साध दे! हे शारदे! विशारदे॥

(कल्या

卐

मानस पूजा

मूर्ति की मानसिक पूजा गन्ध पुष्पादि सहित पूजा से श्रेष्ठतर लेकिन नये साधकों को स्थूल पूजा से ही प्रारम्भ करना चाहिए भक्ति-मार्ग में अग्रसर होने पर वे मानस-पूजा का आश्रय ले सकते है

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरंगृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यद्यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।

श्री शंकराचार्य कृत यह मानस-पूजा ईश्वर की मानस-पूजा व एक उत्कृष्ट प्रक्रिया है।

पञ्चम संस्करण जनवरी १९८७

VEER PRINTERS & PUBLISHERS
E-17, Sector 6, NOIDA, Distt. Ghaziabad (U.P.)

विनम्र प्रार्थना

मनुष्य जीवन का परम उद्देश्य प्रभु प्राप्ति एवं आत्मस्वरूप को पहचानना है । उत्तम लक्ष्य प्राप्ति के लिए साधन भी उत्तम होने चाहिएं । ज्ञान वैराग्य, ब्रह्मचर्य, परोपकार, दया, अहिंसा, सरलता, शुचिता, क्षमा, सद्बुद्धि, श्रद्धा, विश्वास, यम, नियम, सदाचार, स्वाध्याय, सत्संग, विवेक, सद्गुरु की शरण आदि अनेक उत्तमोत्तम साधन हैं । प्रायः यह बात सभी जानते हैं । परन्तु साधन का फल 'उसके' उपयोग में है ।

एक आस्तिक रूप के हृदय से निकला हुआ संकल्प का साकार रूप यह पुस्तिका है । अनेक भक्तों ने नियम से पाठ करके अपने अभीष्ट की प्राप्ति की है । विश्वासपूर्वक आर्त प्राणी इनका विधिवत् अनुष्ठान करेगा तो निश्चित ही लाभ होगा ।

इसकी प्रेरणा आप सरीखे भक्त-जन एवं प्रभु की अपार कृपा द्वारा ही हुई । फिर भी इसमें कुछ अशुद्धियाँ या कोई कमी रह गई हो तो उसके लिए मैं आपसे कर-बद्ध प्रार्थना करता हुआ क्षमा प्रार्थी हूँ । आशा है आप मेरी त्रुटियों और अज्ञानता की ओर ध्यान न देते हुए इस लघु पुस्तिका द्वारा लाभ उठायेंगे । यदि आपको इस पुस्तक के पठन से थोड़ा सा भी लाभ होगा तो मैं अपना प्रयत्न सफल समझूंगा । कुछ भक्तों के अनुरोध पर मैं रामचरित मानस के सुन्दर काण्ड को इस पुस्तक में दे रहा हूँ ।

मैं उन महानुभावों का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के चतुर्थ संस्करण के प्रकाशन में सहयोग दिया है ।

इस पुस्तक का पठन करना ही इसका मूल्य होगा ।

निवेदक—

आनन्द विनोद दत्ता

भगवान का मंगल विधान

पुरुषार्थ करने वाले को यदि असफलता मिलती है, तो वह अपने कर्म में त्रुटि तथा दूसरों को बाधक मानकर दुखी होता है। प्रारब्ध-वादी असफलता में अपने भाग्य को कोस कर दुखी होता है, पर जो प्रत्येक फल में भगवान की कृपा से भरा हुआ भगवान् का मंगल विधान देखता है, वह न तो प्रचुर सम्पत्ति में हर्षित होता है, और न भारी विपत्ति में रोता है। वह शान्तिपूर्ण चित्त से निरन्तर अनुकूलता-प्रतिकूलता दोनों में भगवान् का मंगलमय विधान मानकर इसी में कल्याण मानता हुआ आनन्द मग्न रहता है। वह हर अवस्था में भगवान् की कृपा के दर्शन करता रहता है।

जीवन का अस्तित्व

क्षण भंगुर जीवन की कलिका,
कल प्रातः को जाने खिली न खिली।
मलयागिरि की शुचि सुन्दर शीतल,
मन्द समीर चली न चली ॥
कलिकाल कुठार लिए फिरता,
तन नम्र पै चोट झिली न झिली।
रट ले हरि नाम अरी रसना,
कल प्रातः को जाने हिली न हिली ॥

उपासना

भगवान एक है, पर साधक और भक्तजन भिन्न-भिन्न भाव और रुचि के अनुसार उसकी उपासना किया करते हैं। इसके नाम और भाव अनन्त हैं, जो कोई किसी भी भाव किसी भी नाम या किसी भी रूप से उस अद्वितीय सच्चिदानन्द की उपासना या साधन भजन क्यों न करे उसे निश्चय ही भगवान का लाभ होगा। भगवान का नाम और ध्यान चाहे जिस रीति से करो, उससे कल्याण ही होगा।

।। श्रीगणेशाय नमः ।।



गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारक नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ।।

विनायक वन्दना

गाइए गणपति जग वन्दन, संकर सुवन भवानी नन्दन
सिद्धि-सदन, गज वदन विनायक, कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक
मोदक-प्रिय मुद-मंगल दाता, विद्या-वारिधि बुद्धि-विधाता
माँगत तुलसीदास कर जोरे, बसहिं राम सिय मानस मोरे
(विनय-पत्रिका)

संकट नाशन गणेश स्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरी पुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ।। १ ।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।। २ ।।
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टकम् ।। ३ ।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशम् गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।। ४ ।।
द्वादशैतानि नमानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नं भयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ।। ५ ।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ।। ६ ।।
जपेत् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ।। ७ ।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ।। ८ ।।

आरती गज बदन विनायक की

आरती गज वदन विनायक की ।
सुर मुनि पूजित गण नायक की ॥

एक दन्त शशि भाल गजानन ।
विघ्न विनाशक शुभ गुण कानन ॥
शिव सुत वन्द्यमान चतुरानन ।
दुख विनाशक सुख दायक की ॥

ऋद्धि-सिद्धि स्वामी समर्थ अति ।
विमल बुद्धि दाता सुविमल मति ॥
अघवन दहन अमंगल अविगत ।
विद्या विनय विभव दायक की ॥

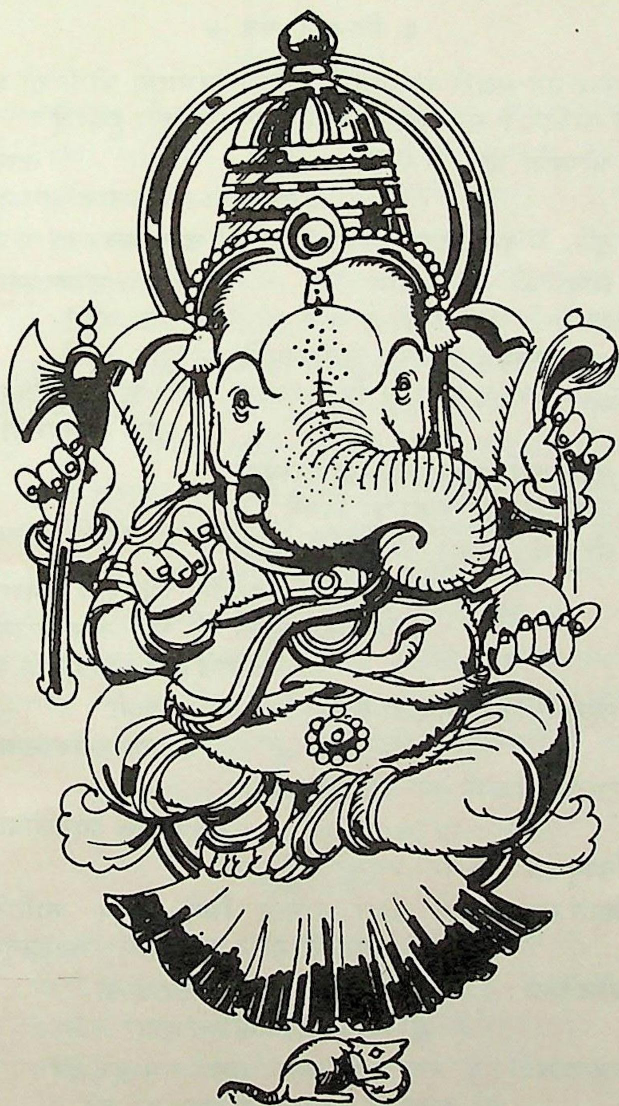
पिङ्गल नयन विशाल शुण्डधर ।
धूम्र वर्ण शुचि वज्रांकुश कर ॥
लम्बोदर वाधा विपत्ति हर ।
सुर वन्दित सब विधि लायक की ॥

सरस्वती वंदना

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला या शुभ्र वस्त्रावृता ।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ॥

शिव ध्यानम्

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥



* विघ्नहर मंत्र *

मन्त्र उन अक्षरों का नाम है जिनका परमात्मा की किसी शक्ति अथवा आकार के साथ हजारों वर्षों से सम्बन्ध जुड़ा हुआ है।

१. **श्रीगणेश जी :** ॐ गं गणपतये नमः **जपसंख्या**
५ लाख विघ्न नाश तथा कामना पूर्ति

२. **सूर्य :** ॐ **नमो** नारायणाय **१३ लाख फल स्वास्थ्य प्राप्ति**

३. **शिव :** ॐ नमः शिवाय **५ लाख सर्वकामना पूर्ति**
(ख) हे चन्द्र मौली हे चन्द्र मौली हे चन्द्र मौली
स्वंयंभू मुरारी पिनाकधारी भस्मांग धारी
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव शरणं हे त्रिपुरारी
५ लाख सर्वकामना पूर्ति

४. **महालक्ष्मी, महाकाली, महा सरस्वती**
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै·**विच्चै**

५. **श्री राम :** (क) ॐ रां रामायनमः
(ख) राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनामं तत्तुल्यं श्री राम नाम वरानने ॥
६ लाख ज्ञान और ऐश्वर्य प्राप्ति

६. **महाकाली :** ॐ मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानी
९ लाख सर्वकामना पूर्ति

७. **राधाकृष्ण :** ॐ नमो राधाकृष्णाभ्याम्
१० लाख अभिलाषा पूर्ति

८. **विष्णु जी :** ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

९. **जगत माता :** सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते

१०. **बीज मन्त्र :** ॐ ह्रीं हूँ है नमः रात्रि नित्य ५ सौ
ॐ ह्रीं·श्रीं नमः नित्य एक हजार

११. **महामन्त्र :** हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

श्री शिव स्तुति

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं ।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं, गुणागार संसार पारं नतोऽहं ।
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गम्भीरं, मनोभूत कोटिप्रभाश्रीशरीरं ।
स्फुरुन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा, लसद्भाल वालेन्दु कण्ठे भुजंगा ।
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयी शूल निर्मूलनम् शूलपाणिं, भजेहं भवानीपतिं भावगम्यम् ।
कलातीत कल्याण कल्पांतकारी, सदासज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।
न यावद उमानाथ पादारविंदं, भजंतीह लोके परे वा नराणां ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जराजन्म दुःखौघ तातप्यमानम्, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।

शिव वन्दना

शङ्खेन्द्वाभमतीव सुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं ।
कालं व्याल कराल भूषणधरं गंगा शशाङ्क प्रियम् ।।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं ।
नौमीड्यम् गिरिजापतिं गुणनिधिं कंदर्पहं शंकरम् ।।

शिव ध्यान

यस्यांके च विभाति भूधर सुता देवापगा मस्तके ।
भाले बाल विधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ॥
सोयं भूति विभूषण सुर वरः सर्वाधिपः सर्वदा ।
शर्वः सर्वगतः शिवः शशि निभः श्रीशंकर पातुमान् ॥

महादेव शिवशंकर शंभो उमाकान्त हरि त्रिपुरारे ।
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन् गंगाधर मृड मदनारे ॥
हर शिव शंकर गौरीशं वन्दे गंगाधरमीशम् ।
रुद्रं पशुपतिमीशानं कलये काशी पुरीनाथम् ॥
जय शंभो जय शंभो शिव गौरी शंकर जय शंभो ।
जय शंभो जय शंभो शिव गौरी शंकर जय शंभो ॥

द्वादश ज्योतिर्लिगानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशौले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥ १ ॥
परल्यां बैजनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥ २ ॥
वाराणास्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घुसृणेशं शिवालये ॥ ३ ॥
एतानि ज्योतिर्लिगानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मेरणान विनश्यति ॥ ४ ॥

आपदामपहर्त्तारं दातारं सर्वसपदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङगरागाय महश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।।
मन्दाकिनीसलील चन्दन र्धचिताय, नन्दीश्वरप्रमथनाम महेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्प सुपू जिताय तस्मै मकाराय नम शिवायः
शिवायं गौरीबन्दनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाश्काय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय
वसिष्ठकुम्मोद भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवा चिशेखराय ।
चन्द्रार्कवेश्वानरंलोचनाय तस्मैवकारय नमः शिवाय ।
यक्ष स्वरुपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।

जिनके कंठ में सापों का हार है जिनके तीन नेत्र है भस्म । जिनका अंगराग अनुलेपन है और दिशाए ही जिनका वस्त्र है उन । शुद्ध आविनाशी महेश्वर न कारस्वरुप शिव का नमस्कार है। गंगा और चन्दन से जिन को अर्चा हुई है मन्दार पुष्प तथा अन्याय कुसमों से जिनकी सुन्दर पूजा हुई है। उन नन्दी के अधिपति प्रगथगणों के स्वामी महेश्वर कारस्वरुप शिव को नमस्कार है। जो कल्याणस्वरुप है, पार्वती जी के मुख कमल को प्रसन्न करने के लिए जो सूर्यस्वरुप है, जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले, जिनकी ध्वजा के बैल का चिन्ह है, उन शोभाशाली नीलकंठ शिकार स्वरुप शिव को नमस्कार है। वसिष्ठ अगस्त्य और गौतम आदि मुनियों ने तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की है। चन्द्रमा सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र है, उन कारस्वरुप शिव को नमस्कार है। जिन्होंने यक्षरुप धारणा किया है जो जटाधारी है, जिनके हाथ में पिनाक है, जो सनातन पुरुष है, उन दिगम्बर देवाय कारस्वरुप शिव को नमस्कार है।

दोहा—जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास , तुम, देउ अभय वरदान ॥

जय गिरजा पति दीन दयाला, सदा करत संतन प्रतिपाला।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके, कानन कुण्डल नागफनी के॥
अंग गौर सिर गंग बहाये, मुण्ड माल तनु क्षार लगाए।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहैं, छवि को देख नाग मुनि मोहैं॥
मैंना मात की होवे दुलारी, वाम अंग सोहत छवि न्यारी।
कर त्रिशूल शोभा अति भारी, करत सदा शत्रुन क्षयकारी॥
नन्दी गणेश सोहै तँह कैसे, सागर मध्य कमल है जैसे।
कार्तिक श्याम और गणराऊ, या छवि को कहि जात न काऊ॥
देवन जबहिं जाय पुकारा, तबहिं दुख प्रभु आप निबारा।
किया उपद्रव तारक भारी, देवन सबमिलि तुमहिं जुहारी॥
तुरन्त षडानन आप पठायउँ, लव निमेश महँ मार गिरायउँ।
आप जलंधर असुर संहारा, सुयश तुम्हार विदित संसारा॥
त्रिपुरासुर संग युद्ध मचाई, सबहिं कृपा कर लीन बचाई।
किया तपहिं भागीरथ भारी, पुरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी॥
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं, सेवक स्तुति करत सदाहीं।
वेद नाम महिमा तुम गाई, अकथ अनादि भेद नहिं पाई॥
प्रकटे उदधि मन्थन में ज्वाला, जरे सुरासुर भए बिहाला।
कीन्ह दया तहँ करी सहाई, नील कंठ तब नाम कहाई॥
पूजन राम चन्द्र जब कीन्हा, जीत के लंक विभीषण दीन्हा।
सहस कमल में हो रहे धारी, कीन्ह परीक्षा तबहि पुरारी॥
एक कमल प्रभु राखेउ जोई, कमल नैन पूजन चहुँ सोई।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर, भए प्रसन्न दिए इच्छित वर॥
जय जय जय अनन्त अविनासी, करत कृपा सब पर घट वासी।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावें, भ्रमत रहे मोहि चैन न आवे॥

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो, यह अवसर मोहि आन उबारो ।
ले त्रिशूल शत्रुन को मारो, संकट में मोहि आन उबारो ॥
मात-पिता भ्राता सब कोई, संकट में पूछत नहि कोई ।
स्वामी एक है आश तुम्हारी, आय हरहु सब संकट भारी ॥
धन निर्धन को देत सदा ही, जो कोई जाचे वो फल पाही ।
अस्तुति केहि विधि करों तुम्हारी, क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥
शंकर हो संकट के नाशन, विघ्न विनाशन मंगल कारन ।
योगी यति मुनि ध्यान लगावें, नारद शारद शीश नवावें ॥
नमो नमो जय नमो शिवाय, सुर ब्रह्मादिक पार न पावें ।
जो यह पाठ करे मन लाई, तापर होत है शम्भु सहाई ॥
ऋनियाँ जो कोई हो अधिकारी, पाठ करे सो पावन हारी ।
पुत्रहीन कर इच्छा कोई, निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ॥
पंडित त्रयोदशी को लावे, ध्यान पूर्वक होम करावे ॥
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा, मन नहिं ताके रहे कलेशा ॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे, शंकर सन्मुख पाठ सुनावे ॥
जन्म जन्म के पाप नसावे, अन्त बास शिव पुर में पावे ॥
कहै अयोध्या आस तुम्हारी, जानि सकल दुःख हरहु हमारी ॥

॥ दोहा ॥

नित्य नेम कर प्रात ही, पाठ करो चालीस ।
तुम मेरी मन कामना, पूर्ण करहु जगदीश ॥
मगसर छट हेमन्त ऋतु, सम्वत चौसठ आन ।
अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन कल्यान ॥

आरती शिवजी की

ओ३म् जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, अर्धाङ्गी धारा ।। जय०
एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन, वृषवाहन साजे ।। जय०
दो भुज चार चतुर्भुज, दस भुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे ।। जय०
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे ।। जय०
अक्षमाला बनमाला, मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा, भाले शुभकारी ।। जय०
कर मध्ये च कमण्डल, चक्र त्रिशूल धर्ता।
जग कर्ता जग हरता, जग पालन कर्ता ।। जय०
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरों।
वाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू ।। जय०
लक्ष्मी वर सावित्री, श्री पार्वती संगे।
अर्धाङ्गी गायत्री, सिर सोहे गंगे ।। जय०
काशी में विश्वनाथ विराजे नन्दा ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावे, महिमा अति भारी ।। जय०
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका ।। जय०
त्रिगुण स्वामी जी की आरति, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, वांछित फल पावे ।। जय०

विष्णु भगवान का ध्यान

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमल-नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं ।
बन्दे विष्णुं भव भय हरं सर्वलोकैक नाथम् ।।

हे रामा पुरुषोत्तमा नर हरे नारायणा केशवा ।
गोविन्दा गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ।।
हे कृष्णा कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ।
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ।।

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षस्थले कौस्तुभम् ।
नासाग्रे वर मौक्तिकं कर तले वेणु करे कंकणम् ।।
सर्वाङ्गे हरि चन्दनम् सुललितम् कण्ठे च मुक्तावलि ।
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः ।।

श्री रामचन्द्र स्तोत्र

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम् ।
नवकंजलोचन कंजमुख कर कंज पद कंजारुणम् ।।
कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरज सुन्दरम् ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम् ।।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम् ।।
सिर क्रीट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ।
आजानु भुज शर चापधर संग्रामजित खरदूषणम् ।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनिमन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवासकुरु कामादि खल दल गंजनम् ।।

मन जाहि राँचो मिलहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो ।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरी अशीश सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसि भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

वन्दना

करता हूँ मैं वन्दना, नत शिर बारम्बार ।
तुझे देव परमात्मन, मंगल शिव शुभकार ॥
अंजलि पर मस्तक किए, विनय भक्ति के साथ ।
नमस्कार मेरा तुझे, होवे जग के नाथ ॥
दोनों कर को जोड़ कर, मस्तक घुटने टेक ।
तुझको हो प्रणाम मम, शत शत कोटि अनेक ॥
पाप हरण मंगल करण, चरण-शरण का ध्यान ।
धार करूँ प्रणाम मैं, तुमको शक्ति-निधान ॥
भक्ति-भाव शुभ कामना, मन में हो भरपूर ।
श्रद्धा से तुझको नमूँ, मेरे राम हजूर ॥
ज्योतिर्मय जगदीश हे, तेजो मय अपार ।
परम पुरुष पावन परम, तुझको हो नमस्कार ॥
सत्य ज्ञान आनन्द के, परम धाम श्री राम ।
पुलकित हो मेरा तुझे, होवे बहु प्रणाम ॥

आरती श्री जगदीश्वर जी की

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, छिन में दूर करे ॥ ॐ जय०
जो ध्यावे फल पावै, दुख बिनसे मन का ।
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ जय०

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ।। ॐ जय०
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तरयामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ॐ जय०
तुम करुणा के सागर, तुम पालन करता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।। ॐ जय०
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ।। ॐ जय०
दीनबन्धु दुख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ॐ जय०
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।। ॐ जय०
प्रेम सभा जन तुमको, निशदिन ही ध्यावे ।
पार लगा दो नैया, यही अरज गावे ।। ॐ जय०
प्रभु जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, वांछित फल पावे ।। ॐ जय०

आरती श्री सत्यनारायण जी की

जय लक्ष्मी रमणा जय लक्ष्मी रमणा,
सत्य नारायण स्वामी जनपातक हरणा । जय०
रतन जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि साजे,
नारद करत निरन्तर घण्टा ध्वनि बाजे । जय०
प्रगट भये कलि कारण द्विज को दरश दियो,
बूढ़ो ब्राह्मण बन कर कंचन महल कियो । जय०
दुर्बल भील कराल तिस पर दया करी
चन्द्रचूड़ इक राजा उसकी विपत हरि । जय०

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीन्ही,
सो फल भोगो प्रभु जी तब स्तुति कीन्ही। जय०
भाव-भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरे,
श्रद्धा धारण कीन्ही तिन कें काज सरे। जय०
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी,
मन वांछित फल दीनो दीन दयाल हरी। जय०
चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल मेवा,
धूप दीप तुलसी से राजी श्री सत देवा। जय०
सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे। जय०

देवी वन्दना

ॐ घंटाशूलहलानि शंखमसले चक्रं धनुः सायकम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्॥
गौरीदेहसमुद्भवाम् त्रिनयनामाधारभूतां महा।
पूर्वा मन्त्र सरस्वती मनु भजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम्॥

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुख हरनी।
निराकार है ज्योति तुम्हारी, तिहुँ लोक फैली उजियारी।
शशि ललाट मुख महा विशाला, नेत्र लाल भ्रकुटी विकराला।
रूप मात को अधिक सुहावे, दरश करत जन अति सुख पावे।
तुम संसार भक्ति लै कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना।
अन्न पूर्णा भई जग पाला, तुम हो आदि सुन्दरी बाला।
प्रलय काल सब नाशन हारी, तुम गौरी शिव शंकर प्यारी।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें, ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें।
रूप सरस्वती को तुम धारा, दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।

धरो रूप नृसिंह का अम्बा, प्रकट भई फाड़ कर खम्वा।
रक्षा करि प्रह्लाद बचायो, हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो।
लक्ष्मी रूप धरि जग माहीं, श्री नारायण अंग समाहीं।
क्षीर सिन्धु में करत बिलासा, दया सिन्धु दीजै मन आशा।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी, महिमा अमित न जात बखानी।
मातङ्गी धूमावती माता, भुवनेश्वरि वगला सुख दाता।
श्री भैरव तारा जग तारिणि, धन्य मात भव दुःख निवारणि।
केहरि वाहन सोह भवानी, लौकड वीर चलत अगवानी।
कर में खप्पर खड़ग विराजे, जाको देखि काल डर भागे।
सोहे अस्त्र और त्रिशूला, जाते उठत शत्रु हिय शूला।
नगर कोटि में तुम्हीं विराजत, तिहुँ लोक में डंका बाजत।
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्त बीज शत्रु संहारे।
महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अघ भार मही अकुलानी।
रूप कराल काली को धारा, सैन सहित तुम तिहि संहारा।
परी भीर सन्तन पर जब जव, भई सहाय मात तुम तब तव।
आभापुर अस्वासन लौका, तब महिमा सब रहे अशोका।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी, तुम्हें सदा पूजें नर नारी।
प्रेम भक्ति से जो यश गावे, दुख दरिद्र निकट न आवे।
ध्यावे तुमहिं जो मन लाई, जन्म-मरण ते सो छुटि जाई।
योगी सुर मुनि कहत पुकारी, योग न होय बिन शक्ति तुम्हारी।
शंकर अचरज तव तप कीन्हों, काम क्रोध जीत सब लीनो।
निश दिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहिं सुमिरत तुमको।
शक्ति रूप को मरम न पायो, शक्ति गई तब मन पछतायो।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी, जै जै जै जगदम्ब भवानी।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति नहिं कीन्ह विलम्बा।

मो को मात कष्ट अति घेरो, तुम बिन कौन हरे दुख मेरो।
आशा तृष्णा निपट सतावे, रिपु मूरख मोहि अति डरपावे।
शत्रु नाश कीजे महारानी, सुमिरूँ यतचित तुम्हें भवानी।
जब लग जिऊँ दयाफल पाऊँ, तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ।
दुर्गा चालीसा जो नर गावे, सब सुख भोग परम पद पावे।
देवी दास शरण निज जानी, करो कृपा जगदम्ब भवानी।

*

श्री दुर्गा जी की आरती

जय अम्बे गौरी माँ जय श्यामा गौरी,
तुमको निशि दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी। जय०
माँग सिन्दूर विराजत टीको मृद मद को,
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको। जय०
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती,
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति। जय०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे,
रक्त कुसुम गल माला कंठन पर साजे। जय०
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी,
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी। जय०
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरों,
बाजत ताल मृदङ्गा, और बाजत डमरू। जय०
कचन थाल विराजत अगर कपूर बाती,
श्रीमाल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योति। जय०
चण्ड मुण्ड सहारे शोणित बीज हरे,
शुम्भ निशुम्भ पछाड़े निर्भय राज करे। जय०

अथ

श्री महात्रिपुर-सुन्दरी-नीराजनम्

आरती

श्रीगणेशायनमः ।। जयनाथ २ जयकरुणासिन्धो २ ।

दुस्तरसंसारार्णवसन्तारणबन्धो, जय नाथ २ ।

शिरसिस्थितसाहस्रच्छदकमला वासं २

शरणागतमोमुह्यत्कृत-चित्तबिकाशं,

गुरनाथ ! त्वां ध्याये । मामुद्धरदासं २,

चरणाम्बुजनतनिजजन-परिहृतभव-पाशं,

जयनाथ २ । नवनाथात्मक मण्डल परिबृत्याधारम् २ ।

निजभक्तव्रजदर्शित-भवसागर पारम् ।

वामांकामल पीठ-स्थित सुन्दरदारं २,

त्वां जानेकामेशं हृदये साकारं जयनाथ २ ।

प्रासादिक-परिवीक्षण सन्तोषितलोकं २,

निजदर्शनदूरीकृतजनमानसशोकम् ।

ध्यायं ध्यायं नैव, स्थितमंहस्तोकं २,

तर्पयचिद्रसबृष्ट्या मां नाथ स्तोकम्, जयनाथ २ ।

मुरजाद्याखिलवाद्य-ध्वनि-पूरितगगने २,

सम्मुखतिष्ठच्छ्रुति परमुनिजनकृतमनने,

नृत्यत्सुरनारीगण, कृतभूतलदलने २,

नीराजनसमये तव धन्यः स्यांनमने जयनाथ २

त्वत्स्तवने सुरुगुरुरपिनेवैति क्षमतां २,

तत्किराजोत्तरपदकामारव्यः क्षमताम् ।

सत्यानन्दस्वामिन् ! तवचरणे नमताम् २,
मम मौलिश्चित्तं च त्वयि सततं रमताम् । जयनाथ २ ।।

जयदेवि २, जय विश्वाधारे ! जय विश्वाधारे !
दीनानाथोद्धारणप्रवणेजनसारे
त्वत्पदपद्मे पद्मे त्रिधृतव्यापारे २,
मयि दीने कुरु करुणां करुणामृतपारे जयदेवि २ ।

अमृतोदधिमध्यस्थितनवरत्नद्वीपे २,
विष्वग्विकसितसुरतरुनवचम्पकनीपे
नानाकुसुमामोदिते विधुतागुरुधूपे २,
चिन्तामणि भवनाङ्गणतिष्ठत्सुरभूपे ?. जयदेवि २ ।

माणिक्योज्वलचत्वर सिंहासन शोभे २,
शिवपंचकमंचेचित जनलोचनलोभे
सुश्वेतातपवारण, चलचामरदंडे २
ध्याये भवतीमनिशंकृतजगदानन्दे । जय देवि 2 ।

दलित-जपाकुसुमोपमवसनच्छन्नाङ्गी २,
तरुणारुणकरुणाप्रद किरणावलिभृङ्गी,
दधती रचनां नयने, यमुनातारङ्गीम् २
कलयंती कुचकोशे सुषुमां नारङ्गीं । जयदेवि २

शरपंचकवाणासन सृणिपाशोल्लसितां २,
मलयानिलपरिवारितमुखपद्मस्वसिताम्
बालामृतकरमंडित, चूडातटमहिताम् २
ज्योतिस्त्रितयालङ्कृ. तनयनत्रयसहिताम् जयदे.वं २,

पशुपतियन्त्रणपटुतर रोमावलियूपाम् २,
मन्मथतस्कर-गुप्तिक्षमनाभीकूपाम् ।
प्रपदालम्बिशिखामणि-वृन्दारकभूपाम् २,
कमलासनहरिहर मुखचिन्त्यामृतरूपाम्, जयदेवि २ ।

काली वगलाबालातारांभुबनेशी
बाराही मातङ्गी कमला·········वंचनेशी

छिन्ना दुर्गा गंगा, काशी कामेशी २,
त्वत्तोनान्यत्किञ्चित्त्वंचिद्रसपेशी जयदेवि २,
त्वं भूमिस्त्वं सलिलं त्वं तेजः प्रबलम् २
त्वं वायु स्त्वंव्योम त्वंचित्तं विमलं
त्वंजीवस्त्वंचेश, स्त्वं ब्रह्मास्यमलं २
सत्यानृतयो नान्यत्त्वत्तः किंसकलम्, जय देवि २।
कुलकुण्डे त्वं किल कुरुषे देत्रिप्रस्वापं २
स्वाधिष्ठाने मिहिरायुतदीधितपापम्
नीला नाभौकण्ठे, शशिभाहृततापं २
वर्षस्यामृतविन्दावानन्दा वापम् जयदेवि २
त्वत्पदपद्मे चित्तंत्रिपुरे मेरमतां २
तत्रैव प्रतिवेलं मौलिर्मे नमतां
याता यात क्लेशः सद्य संशमतांम् २
याचे भूयो भूयोभवतामेभवतां जय देवि २
नृत्यति गायति सुरसं सुरनारी वृन्दे २,
करतालीदानोत्सुकसुरबिततानन्दे,
नीराजन काले तब, ·मुनिजनकृतवन्दे २,
चरणाम्बुज सम्राजा परिहृतभव खेदे जयदेवि जयदेवि ॥
इति श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्या नीराजनम् समाप्तम् । शुभम् ।

शंकर जन तेरा चेला, निश दिन गुण गाता,
सुन्दर श्यामा गौरी, त्रिलोकी माता। जय०
तुम ब्रह्माणी तुम रुद्राणि, तुम कमला रानी,
आगम निगम बखानी, ता पर शिव रानी। जय०
अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे। जय०

ग्रह शान्त्यर्थ मन्त्र

ॐ ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी भानु शशी भूमि सुतो बुधाय। गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवे सर्वे ग्रहा शान्तिकरा भवन्तु।

मन्त्र	जप संख्या
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	७०००
ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	११०००
ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	१००००
ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	६०००
ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः	१६०००
ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	१६०००
ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	२३०००
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	१८०००
ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	१७०००

सूर्य स्तोत्रम् (२१ नामों वाला)

विकर्तनो विवस्वांश्च, मार्तण्डो भास्करो रविः।
लोक प्रकाशकः श्रीमांल्लोकचक्षुर्महेश्वरः॥
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा।
तपन स्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्व वाहनः॥
गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृतः।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा रवेः॥

पवन पुत्र वन्दना

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।
वातात्मजं बानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसानमामि।
उल्लंघ्य सिंधो सलिलम् सलीलम् यः शोक वह्नि जनकात्मजा याः।
आदाय तेनैव ददाह लंकां नमामि तं प्रांजलि राञ्जनेयम्।

हनुमान चालीसा

दोहा—श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
वरनउँ रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार॥
बुद्धि हीन तनु जानिके, सुमिरो पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देउ मोहि, हरहु कलेश विकार॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।
राम दूत अतुलित बल धामा, अंजनि पुत्र पवन सुत नामा।
महावीर विक्रम बजरङ्गी, कुमति निवार सुमति के सङ्गी।
कंचन वर्ण विराज सुवेशा, कानन कुण्डल कुंचित केशा।
हाथ वज्र और ध्वजा विराजे, काँधे मूंज जनेऊ साजे।
शंकर सुवन केसरी नन्दन, तेज प्रताप महा जग वन्दन।
विद्यावान गुणी अति चातुर, राम काज करिवे को आतुर।
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा, विकट रूप धरि लंक जरावा।
भीम रूप धरि असुर संहारे, राम चन्द्र के काज सँवारे।
लाय संजीवन लखन जियाए, श्री रघुवीर हरषि उर लाए।
रघपति कीनी वहुत वडाई, तुम मम प्रिय भरत सम भाई।
सहस बदन तुम्हरो यश गावे, अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावे।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा, नारद शारद सहित अहीसा।
यम कुबेर दिग्पाल जहाँते, कवि कोविद कहि सके कहाँते।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीना, राम मिलाय राज्य पद दीना।
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना, लंकेश्वर भए सब जग जाना।
युग सहस्र योजन जो भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लाँघ गए अचरज नाहीं।
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।
राम दुवारे तुम रखवारे, होत न आज्ञा विन पैसारे।
सव सुख लहे तुम्हारी शरणा, तुम रक्षक काहू को डरना।
आपन तेज सम्हारो आपे, तीनहु लोक हाँकते काँपे।
भूत पिशाच निकट नहीं आवे, महावीर जब नाम सुनावे।
नाशे रोग हरे सब पीरा, जपत निरन्तर हनुमत बीरा।
संकट से हनुमान छुड़ावे, मन क्रम वचन ध्यान जो जावे।
सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा।
और मनोरथ जो कोई लावे, तासु अमित जीवन फल पावे।
चारों युग प्रताप तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा।
साधु सन्त के तुम रखवारे, असुर निकन्दन राम दुलारे।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, अस वर दीन्ह जानकी माता।
राम रसायन तुम्हारे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा।
तुम्हरे भजन राम को भावे, जन्म जन्म के दुख विसरावे।
अन्त काल रघुपति पुर जाई, जहाँ जन्म हरि भगत कहाई।
और देवता चित न धरई, हनुमत सेई सर्व सुख करई।
संकट हरे मिटे सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलवीरा।
जय जय जय हनुमान गुसाईं, कृपा करो गुरु देव की नाईं।
यह शत बार पाठ कर जोई, छूटे बन्द महा सुख होई।
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा, होय सिद्ध साखी गौरीशा।
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजे नाथ हृदय में डेरा।

दोहा—पवन तनय संकट हरण, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक मत्तगयंद छंद

वाल समय रवि भक्ष लियौ तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सु त्रास भई जग को यह संकट काहु सु जात न टारो ।।
देवन आन करी विनती तब छांड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।।
बाली की त्रास कपीश बसे गिरि जात महा प्रभु पंथ निहारौ ।
चौंकि महा मुनि श्राप दियौ तब चाहिए कौन उपाय विचारौ ।।
कर द्विज रूप लिवाय महा प्रभु सो तुम दास कौ शोक निवारौ ।
अंगद के संग लैन गए सिय खोजि कपीश यह बैन उचारौ ।।
जीवत ना बचिहों हमसों जो बिना सुधि लैए यहाँ पगु धारौ ।
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब लै सिय की सुधि प्राण उबारौ ।।
रावण त्रास दई सिय को तब राक्षसी सो कहि शोक निवारौ ।
ताहि समय हनुमान महा प्रभु जाय महा रजनीचर मारौ ।।
चाहत सीय अशोकसु आगिसो दे प्रभु मुद्रिका शोक निवारौ ।
वाण लग्यो उर-लक्ष्मण के तब, प्राण तजे सुत रावण मारो ।।
ले ग्रह वैद्य सुखेन समेत सभी गिरि-द्रोण सु वीर उबारौ ।
आनि सजीवन हाथ दई तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो ।।
रावण युद्ध अजान कियौ तब नाग की फांस सबै सिर डारौ ।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो तब संकट भारो ।।
आन खगेश तबै हनुमान जु बंधन काटि के त्रास निवारो ।
बन्धु समेत जबै अहिरावण लै रघुनाथ पताल सिधारौ ।।
देवहि पूजि भली विधि सों बलि देहु सबै मिलि मन्त्र उचारौ ।
जाय सहाय भए तब ही अहिरावण सैन समेत संहारौ ।।
कार्य किए बड़ देवन के तुम वीर महा प्रभु देखि विचारौ ।
कौन सो संकट मोहि गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारौ ।।
बेगि हरो हनुमान महा प्रभु जो कछु संकट होय हमारौ ।

दोहा—लाल देह लाली लसै, अरु धरि लाल लगूर ।
वज्र देह दानव दलन, जै जै जै कपि शूर ।।
यह अष्टक हनुमान की, विरचित तुलसीदास ।
गंगादास जु प्रेम सों, पढ़े होय दुख नाश ।।

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजे हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।
जाके बल से गिरिवर काँपे, रोग दोष जाके निकट न झांके ।
अंजनि पुत्र महा बल दाई, संतन के प्रभु सदा सहाई ।
दे वीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सीय सुधि लाये ।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत वार न लाई ।
लंका जारि असुर सब मारे, सीयराम जी के काज सँवारे ।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, आनि सजीवन प्राण उबारे ।
पैठि पाताल तोरि जम कारे, अहिरावन की भुजा उखाड़े ।
बाँयें भुजा असुर दल मारे, दहिने भुजा सन्त जन तारे ।
सुर नर मुनि आरती उतारे, जै जै जै हनुमान उचारे ।।
कंचन थार कपूर लों छाई, आरती करत अंजनि माई ।
जो हनुमान जी की आरती गावे, वसि बैकुण्ठ परम पद पावै ।

एक श्लोकी रामायण

आदौराम तपो वनादि गमनं हत्वा मृगं कंचनम् ।
वैदेही हरण जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ।।
बाली निग्रहण समुद्र तरणं लंकापुरी दाहनम् ।
तत्पश्चाद् रावण कुम्भकरण हननं एतद् रामायणम् ।।

एक श्लोकी भागवत

आदौ देवकी देव गर्भनं जन गोपी गृहेवर्धनम् ।
माया पूतना जीव ताप हरणं गोवर्धनोद्धारणम् ।।

कंसाच्छेदन कौरवादि हननम् कुन्ती सुता पालनम् ।
एतद् श्रीमद्भागवत् पुराण कथितं श्रीकृष्ण लीलामृतम् ।।

श्री सप्त-श्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म, व्याहरन् मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमांगतिम् ।।१।।

श्री भगवान जी बोले

ब्रह्म वाचक जो ओंकार एक अक्षर है उसको उदाहरण करता हुआ और उस ओ३म् अक्षर का वाचक मुझे स्मरण करता हुआ जो मनुष्य शरीर का त्याग करके जाता है वह परम गति को प्राप्त होता है ।।१।।

अर्जुनोवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या, जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंधा ।।२।।

हे इन्द्रियों के स्वामी ! तुम्हारे कीर्तन से संसार अतिशय आनन्द पाता है और अनुराग को प्राप्त करता है । राक्षस भयभीत होकर इधर-उधर भागे फिरते हैं । सब सिद्ध लोग आपको प्रणाम करते हैं । यह सब ठीक है ।।२।।

श्री भगवान जी बोले

सर्वतः पाणिपादं तत्, सर्वातोऽक्षि शिरोमुखम् ।
सर्वतः श्रुतिमांल्लोके, सर्वमावृत्य तिष्ठति ।।३।।

जिसके हाथ-पाँव सर्वत्र हैं, जिसके सिर, आँखें और मुख सब ओर हैं और वह सब ठौर श्रवणेन्द्रियुक्त होकर संसार में सब में व्याप्त होकर रहता है ।।३।।

कविं-पुराण मनुशासितार-मणोरणीयांस मनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्ताद् ।।४।।

सर्वज्ञ, अनादि सर्व जगत का नियन्ता, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म सर्व जगत का धारण तथा पोषण करने वाला, अचिन्त्य रूप, सूर्य के समान प्रकाशमान, अज्ञान से परे वह परम पुरुष है । जो उसका स्मरण करता है वह उनको प्राप्त होता है ।।४।।

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसियस्यपर्णानि, यस्तं वेद सवेदवित् ।।५।।

जिसके वेद रूपी पत्र हैं अर्थात् वेदोक्त कर्म से बढ़ता है, ऐसा जो संसार रूपी अश्वत्थ (पीपल का वृक्ष) है, वह ऊर्ध्व मूल अर्थात् सर्वोच्च सत्यलोक जिसका मूल है (जड़ है) और अधः शाख हैं अर्थात् नीचे के लोक उसकी शाखा हैं । वह अध्याय अर्थात् अज्ञान दशा में छेदन के अयोग्य है, ऐसा ही वेदों ने कहा है । जो इसको जानता है वह वेदों को जानने वाला है ।।५।।

सर्वस्य चाहं हृदिसन्निविष्टो, मतः स्मृतिर्ज्ञानम पोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो, वेदान्तकृद्वेदविदेवचाहम् ।।६।।

सबके हृदय में मैं ही निवास करता हूँ और मेरे ही द्वारा सब को स्मृति ज्ञान और विचार होता है और सर्व वेदों के द्वारा मैं ही जानने योग्य हूँ । वेदान्त का प्रवर्तक तथा वेदों का जानने वाला भी मैं ही हूँ ।।६।।

मन्मना भव मद्भवतो, मद्याजी मां नमस्कुरू ।
मामेवैष्यसि युक्तैवमात्मानं मत्पारायणः ।।७।।

केवल मुझ सच्चिदानन्द घन वासुदेव परमात्मा में ही अनन्य प्रेम निरन्तर अचल मन वाला हो और मुझ परमेश्वर को ही श्रद्धा प्रेम सहित निष्काम भाव से नाम गुण और प्रभाव के श्रवण, कीर्तन, मनन और पठन-पाठन द्वारा निरन्तर भजने वाला हो, मेरा (शङ्ख चक्र गदा पदम और किरीट कुण्डल आदि भूषणों से युक्त पीताम्बर

बन माला और कौस्तुभ मणि धारी) मन वाणी और शरीर के द्वारा सर्वस्व अर्पण करके अतिशय श्रद्धा भक्ति और प्रेम से विह्वलतापूर्वक पूजन करने वाला हो, मुझ सर्व-शक्तिमान विभूति बल ऐश्वर्य माधुर्य गम्भीरता उदारता वात्सल्य और सुदृढ़ता आदि गुणों से सम्पन्न सबके आश्रय रूप वासुदेव को विनय भाव पूर्वक भक्ति सहित साष्टांग दण्डवत प्रणाम कर इस प्रकार मेरी शरण हुआ तू आत्मा मेरे में एकीभाव करके मेरे को ही प्राप्त होवेगा।

मानस सिद्ध मन्त्र

विपत्ति नाश के लिए—

राजिव नयन धरे धनु सायक। भगत विपत्ति भंजन सुख दायक॥
जो प्रभु दीन दयालं कहावा। आरति हरन वेद जसु गावा॥
दीन दयाल विरदि संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥

विष नाश के लिए—

नाम प्रभाऊ जान शिव नीको। काल कूट फल दीन्ह अमीको॥

जीविका प्राप्ति के लिए—

विश्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥

दरिद्रता दूर करने के लिए—

अतिथि पुज्य प्रियतम पुरारिके। कामद धन दारिद्र दवारिके॥

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए—

जिमि सरिता सागर महु जाहि। जद्यपि ताहि कामना नाहीं॥

पुत्र प्राप्ति के लिए—

प्रेम मगन कौशल्या, निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता, बाल चरित कर जान॥

सम्पत्ति प्राप्ति के लिए—

जे सकाम नर सुनहि जे गावही। सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहीं॥

ऋद्धि सिद्धि प्राप्ति के लिए—

साधक नाम जपहि लय लाए। होहिं सिद्ध आनि मादक पाए॥

यात्रा की सफलता के लिए—

प्रविसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा॥

आकर्षणता के लिए—

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कुछ संदेहू॥

विद्या प्राप्ति के लिए—

गुरु गृह गए पठन रघुराई। अल्प काल विद्या सब आई॥

विचार शुद्धि के लिए—

ताके जुग पद कमल मनावऊं। जासु कृपा निरमल मति पायऊं॥

भक्ति प्राप्ति के लिए—

सोई निज भक्ति मोहि प्रभु, देहु दया करि राम।

सहज स्वरूप दर्शन के लिए—

भगत बछल प्रभु कृपा निधाना। विस्ववासे प्रगटे भगवाना॥
अब प्रभु कृपा करहु एहि भांति। सब तजि भजनु करो दिन राती॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाई राम प्रभुताई॥
उमा कहुं मैं अनुभव अपना। सत हरि भजन जगत सब सपना॥
बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥
नाथ सकल साधन मैं हीना। कीन्ही कृपा जानि जन दीना॥
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥

(जप करते समय मन में यह विश्वास अवश्य रखना चाहिए कि श्री सीताराम जी की कृपा से मेरा कार्य अवश्य सफल होगा।)

गीता सार

क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होता है, न मरता है।

जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिन्ता मत करो। वर्तमान चल रहा है।

तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया? न तुम कुछ लेकर आये, जो लिया यहीं से लिया। जो दिया यहीं पर दिया। जो लिया इसी (भगवान) से लिया। जो दिया, इसी को दिया। खाली हाथ आए, खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर मग्न हो रहे हो। बस यह प्रसन्नता ही तुम्हारे दुखों का कारण है।

परिवर्तन संसार का नियम है। जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण में तुम दरिद्र हो जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।

न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, फिर तुम क्या हो? तुम अपने आपको भगवान् के अर्पित करो। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इसके सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त है।

जो कुछ भी तू करता है, इसे भगवान् के अर्पण करता चल। इसी से तू सदा जीवन-मुक्त का आनन्द अनुभव करेगा।

श्री श्याम सुन्दर की स्तुति

श्री कृष्ण चन्द्र आनन्द कन्द मुकुन्द गिरिवर धारणम् ।
यशुनन्द गोपीचन्द काटहुँ फन्द भव भय हारणम् ।।
नव कंज लोचन तिलक रोचन जगत केवल कारणम् ।
जगदीश योग निधीश बन्दौं मुनीश वेद उचारणम् ।।
मृदु अधर धर मुरली मनोहर तान प्रचारणम् ।
बल बाहु अतुल अनन्त अविचल आदि पुरुष अकारणम् ।।
करुणा निधान सुजान सुन्दर सुलभ सन्तन तारणम् ।
सुख धाम दाता नाम श्याम निकाम बाम विहारणम् ।।

प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में ।।
मेरा निश्चय बस एक यही इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं ।
अर्पण कर दूं दुनिया भर का सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।
जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ जैसे जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे गुण दोष समर्पित हों करतार तुम्हारे हाथों में ।।
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले तब चरणों का पुजारी बनूं ।
इस पूजक की इक-इक रग-रग का हो तार तुम्हारे हाथों में ।।
जब जब संसार का बन्दी बनूं निष्काम भाव से कर्म करूँ ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं निराकार तुम्हारे हाथों में ।।
कर जोर मेरी विनती है यही दिन रात तुझे मैं ध्याता रहूँ ।
दे शक्ति मुझे हे वरदाता मैं गीत तेरे ही गाता रहूँ ।।
मुझ में तुझ में बस भेद यही मैं नर हूं तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में संसार है तुम्हारे हाथों में ।।

वजरंग वाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करैं सनमान ।
तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करैं हनुमान ।।

जय हनुमंत संत हितकारी । सुनि लीजै प्रभु विनय हमारी ।।
जन के काज विलंब न कीजै । आतुर दौरि महासुख दीजै ।।
जैसे कूदि सिंधु के पारा । सुरसा बदन पैठि विस्तारा ।।
आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुरलोका ।।
जाय विभीषन को सुख दीन्हा । सीता निरखि परम-पद लीन्हा ।।
वाग उजारि सिंधु महँ बोरा । अति आतुर जमकातर तोरा ।।
अक्षय कुमार मारि संहारा । लूम लपेटि लंक को जारा ।।
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुरपुर नभ भई ।।
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी । कृपा करहु उर अंतरयामी ।।
जय जय लखन-प्रान के दाता । आतुर ह्वै दुख करहु निपाता ।।
जय हनुमान जयति बल-सागर । सुर-समूह-समरथ भट-नागर ।।
ओं हनु हनु हनु हनुमंत हठीले । बैरिहि मारु वज्र की कीले ।।
ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा । ओं हुं हुं हुं हनु अरि उर-सीसा ।।
जय अंजनिकुमार बलवंता । संकर-सुवन बीर हनुमंता ।।
वदन कराल काल-कुल-घालक । राम-सहाय सदा प्रतिपालक ।।
भूत प्रेत पिसाच निसाचर । अगनि बेताल काल मारी मर ।।
इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की । राखु नाथ मरजाद नाम की ।।
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै । रामदूत धरु मारु धाइ कै ।।
जय जय जय हनुमंत अगाधा । दुख पावत जन केहि अपराधा ।।
पूजा जप तप नेम अचारा । नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ।।
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं । तुम्हरे बल ही डरपत नाहीं ।।
जनकसुता-हरि-दास कहावौं । ता की सपथ, विलंब न लावौं ।।
जय-जय-जय-धुनि होत अकासा । सुमिरत होय दुसह दुख नासा ।।
चरन पकरि, कर जोरि मनावौं । यहि औसर अब केहि गोहरावौं ।।

उठ, उठ, चलु तोहि राम-दोहाई । पायँ परौ, कर जोरि मनाई ।।
ओं चम चम चम चम चपल चलंता । ओं हनु हनु हनु हनु-हनुमंता ।।
ओम हं हं हाँक देत कपि चंचल । ओम सं सं सहमि पराने खल-दल ।।
अपने जन को तुरत उबारौ । सुमिरत होय अनंद हमारौ ।।
यह बजरंग-बाण जेहि मारैं । ताहि कहौ फिरि कवन उबारैं ।।
पाठ करैं बजरंग-बाण की । हनुमंत रक्षा करैं प्रान की ।।
यह बजरंग-बाण जो जापैं । तासों भूत-प्रेत सब काँपैं ।.
धूप देय जो जपैं हमेसा । ता के तन नहि रहैं कलेसा ।।

उर प्रतीति दृढ़, सरन ह्वै, पाठ करैं धरि ध्यान ।
बाधा सब हर, करैं सब, काम सफल हनुमान ।।

प्रार्थना

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषम भवभीर ।।
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम ।।
श्रवन सुजस सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ।।
सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम ।
मम हियँ बसहु निरन्तर सगुन रूप श्रीराम ।।
अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चहउँ निरवान ।
जनम जनम रति राम पद यह वरदानु न आन ।।
परमानन्द कृपायतन मन परिपूरन काम ।
प्रेम भगति अन पायनी देहु हमहि श्री राम ।।
बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्री रंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सत्संग ।।
जौं अनाथ हित हम पर नेहु । तौ प्रसन्न होई यह वर देहू ।
जो सरूप बस सिव मन माहीं । जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ।



ओ३म्, भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ।

भावार्थ—हम उस ईश्वर और उसके चमत्कार का ध्यान करते हैं जिसने इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है । जो पूजनीय है । और सब पाप तथा अन्धकार को हरने वाला है वह हमारी बुद्धि को प्रकाश प्रदान करे ।

भगवान शंकर से प्रार्थना

सिव सिव होई प्रसन्न कर दाया ।
करुनामय उदार कीरति, बलि जाऊँ हरुहु निज माया ।।
जलज-नयन, गुन-अयन, भयन-रिपु, महिमा जान न कोई ।
बिनु तव कृपा राम पद-पंकज, सपनेहुँ भगति न होई ।।
रिषय, सिद्ध, मुनि, मनुज, दनुज, सुर, अपर जीव जग माहीं ।
तव पद विमुख न पार पाव कोउ, कलप कोटि चलि जाही ।।
अहिभूषन, दूषन-रिपु सेवक देव देव त्रिपुरारी ।
मोह-निहार-दिवाकर संकर, सरन सोक भयहारी ।।
गिरिजा मन-मानस-मराल, कासीस, मसान निवासी ।
तुलसिदास हरि चरन कमल बर देउँ भगति अविनासी ।।

श्री राम से प्रार्थना

तुम सम दीन बन्धु न दीन कोउ मो सम, सुनहु नृपति रघुराई ।
मो सम कुटिल-मौलिमनि नहिं जग तुम हरि ! न हरन कुटिलाइ ।।
हौं अनाथ, प्रभु ! तुम अनाथ-हित, चित यहि सुरति कबहुँ नहिं जाइ ।
हौं मन-वचन-कर्म पातक-रत, तुम कृपालु पतितन-गतिदाइ ।।
हौं आरत, आरति-नाशक तुम, कीरति निगम-पुराननि गाइ ।
हौं सभीत, तुम हरन सकल भय, कारन कवन कृपा बिसराइ ।।
तुम सुखधाम, राम श्रम भंजन, हरैं अति दुखित त्रिविध श्रम पाइ ।
यह जिय जानि दास 'तुलसी' कहँ राखहु सरन समुझि प्रभुताइ ।।

(महामृत्युञ्जय मन्त्र)

सर्व प्रकार की वाधाओं के निवारण एवं रोग शान्ति हेतु—

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ

त्र्यम्बकं य्यजा महे सुगन्धिपुष्टि वर्द्धनम् ।
उर्व्वा रुक मिव बन्धनान् मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्

ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ

श्री राम वन्दना

भए प्रकट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप विचारी ।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन वनमाला नयन विसाला सोभासिन्धु खरारी ।।
कह दुई कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ।।
करुना सुख सागर सव गुन आगर जेहि गावहि श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रकट श्री कंता ।।
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।
मम उर सो वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ।।
उपजा जव ग्याना प्रभु मुसकाना चरित वहुत विधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजे सिसु लीला अति प्रिय सीला यह सुख परम अनूपा ।।
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ वालक सुर भूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भव कूपा ।।

ज्ञान पचीसी

काम क्रोध मद लोभ की जब लग घट में खान ।
तुलसी पंडित मूरखा दोनों एक समान ॥१॥

घूम घाम में दिन गया सोचत हो गई साँझ ।
एक घड़ी हरि ना भज्या जन जननी भई बाँझ ॥२॥

लोभ सरिस अवगुण नहीं तप नहीं सत्य समान ।
तीर्थ नहीं मन शुद्धि सम विद्या सम धनवान ॥३॥

न्हाए धोए क्या हुआ जो मन में मैल समाय ।
मीन सदा जल में रहे धोए बास न जाय ॥४॥

दुर्लभ मानुष जन्म है होय न दूजी वार ।
पक्का फल जो गिर गया लगे न दूजी वार ॥५॥

ज्यों तिल माँही तेल है चकमक माहीं आग ।
तेरा साँई तोय में जाग सके तो जाग ॥६॥

सुमरत सुरत लगाय कर मुख से कछु ना बोल ।
बाहर का पट देय कर अन्दर के पट खोल ॥७॥

कबिरा सोता क्या करे जागो जपो मुरार ।
एक दिना है सोवना लाँबे पैर पसार ॥८॥

तरुवर सरवर सन्त जन चौथे बरसे मेह ।
परमारथ के कारणे चारों धारें देह ॥९॥

लेने को सत नाम है देने को अन्न दान ।
तिरने को है दीनता डूबन को अभिमान ॥१०॥

आवत गाली एक है उलटे होत अनेक।
कह कबीर नहीं उलटिए वही एक की एक ॥११॥

हीरा तहाँ न खोलिए जहाँ कुजड़ाँ की हाट।
बाँधो चुपकी पोटरी लागो अपनी बाट ॥१२॥

ऊँचे कुल में जनमिया करनी ऊँच न होय।
सोरण कलश सुरा भरी साधू निन्दा होय ॥१३॥

जहाँ काम तहाँ नाम नहीं, जहाँ नाम कहाँ काम।
दोनों कवहुँ नहीं मिले रवि रजनी एक ठाम ॥१४॥

काशी कावा एक है एकै राम रहीम।
मैदा एक पकवान वहु, बैठ कबीरा जीम ॥१५॥

प्रेम बिना धीरज नहीं, बिरह बिना बैराग।
सतगुरु बिन जावे नहीं, मन, मनसा का दाग ॥१६॥

मैं अपराधी जन्म का नखशिख भरा विकार।
तू दाता दुख भंजना मेरी करो पुकार ॥१७॥

कछु कह नीच न छेड़िये भलो ना वाको संग।
पाथर डारो कीच में उछरि बिगाड़े अंग ॥१८॥

उत्तम विद्या लीजिये यदि नीच पै होय।
पड़ो अपावन ठौर में कंचन तजौ न कोय ॥१९॥

तुलसी कभी न त्यागिए अच्छे कुल की रीति।
लायिक ही से कीजिए व्याह बैर अरु प्रीति ॥२०॥

तुलसी ऐसी प्रीत कर जैसी चन्द्र चकोर।
चौंच झुकी गरदन जली चितवन वाही ओर ॥२१॥

नृप, सज्जन, पंडित, धनी नहीं वैद्य निज जात।
ये जा पुर में हो नहीं, तहाँ न बसिए रात ॥२२॥

नीच निचाई ना तजे सज्जन हू के संग।
तुलसी चन्दन विटप वसि विष नहीं तजत भुजंग ।।२३।।

तुलसी जे कीरति चहें पर की कीरति खोय।
तिनके मुँह मसि लागि है मिटै न मरिए धोय ।।२४।

राम नाम का दीप धर जीह देहरी द्वार।
तुलसी अन्दर वाहरहुँ जो चाहत उजयार ।।२५।।

तीन चीजें

कभी छोटा मत समझो	— शत्रु, कर्ज, बीमारी
सदा हृदय में परखें	— दया, क्षमा, विनय
किसी की प्रतीक्षा नहीं करती	— समय, मृत्यु, ग्राहक
सवका अलग-अलग होता है	— रूप, स्वभाव, भाग्य
भाई भाई को दुश्मन वना देता है	— जर, जोरू, जमीन
पर्दा चाहती हैं	— खाना, दौलत, औरत
हमेशा याद रखिए	— सचाई, कर्तव्य, मौत
इंसान को जलील करती है	— चोरी, चुगली, झूठ
असल उद्देश्य से रोकती है	— वदचलनी, गुस्सा, लाल
हर एक को प्यारी होती है	— औरत, दौलत, औलाद
कोई दूसरा चुरा नहीं सकता	— अक्ल, इल्म, हुनर
गम से घिरे रहते हैं	— ईर्ष्यालु, काहिल, वहमी
निकल कर वापिस नहीं आते	— तीर कमान से, द जुवान से, आत्मा शरीर
इंसान को जीवन में एक वार मिलती है	— माँ-वाप, हुस्न, जवानी

नीच की नम्रता से हमेशा सावधान रहो, क्योंकि—अंकु धनुष, साँप एवं विल्ली झुक कर ही वार करते हैं।

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

—:०:—

पंचम सोपान

(सुन्दरकाण्ड)

—:०:—

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।

कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं ।। २।
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ।।
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ।। ३।

दो०--पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ।। ३।

मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी।
नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी।
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लगि चोरा।
मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर बमत धरनीं ढनमनी।
पुनि संभारि उठी सो लंका । जोरि पानि कर बिनय ससंका।
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा । चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा।
बिकल होसि तैं कपि कें मारे । तब जानेसु निसिचर संघारे।
तात मोर अति पुन्य बहूता । देखेउँ नयन राम कर दूता।

दो०--तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ।। ४

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदयँ राखि कोसलपुर राजा
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई । गोपद सिंधु अनल सितलाई
गरुड़ सुमेरु रनु सम ताही । राम कृपा करि चितवा जाही
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा॥
गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं॥
सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा॥

दो०—रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृन्द तहँ देखि हरष कपिराइ॥ ५॥

लंका निसिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा॥
मन महुँ तरक करैं कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा॥
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा॥
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी॥
बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषन उठि तहँ आए॥
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई। बिप्र कहहु निज कथा बुझाई॥
की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई। मोरें हृदय प्रीति अति होई॥
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी। आयहु मोहि करन बड़भागी॥

दो०—तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम॥ ६॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी॥
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं॥
अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता॥
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा॥
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती॥

दो०--जहँ तहँ गईं सकल तब सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥ ११ ॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी। मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई ॥
आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला। मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकउ तारा ॥
पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥
सुनहि बिनय मम बिटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना। देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

सो०--कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥ १२ ॥

तब देखि मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर ॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी ॥
जीति को सकइ अजय रघुराई। माया तें असि रचि नहिं जाई ॥
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥
रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥

श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रगट होति किन भाई॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ। फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ॥
राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी॥
नर बानरहि संग कहु कैसें। कही कथा भइ संगति जैसें॥

दो०—कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास॥ १३॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुँ जल जाना॥
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी॥
कोमलचित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई॥
सहज बानि सेवक सुखदायक। कबहुँक सुरति करत रघुनायक॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता॥
बचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता॥
जनि जननी मानहु जिय ऊना। तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना॥

दो०—रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर॥ १४॥

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता॥
नव तरु किसलय मनहुं कृसानू। कालनिसा सम निसि ससि भानू॥
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा॥



कपि देखा दारुन भट आवा। कटकटाइ गर्जा अरु धावा॥
अति बिसाल तरु एक उपारा। बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा॥
रहे महाभट ताके संगा। गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा॥
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा। भिरे जुगल मानहुँ गजराजा॥
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई। ताहि एक छन मुरुछा आई॥
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजन जाया॥

दो०—ब्रह्म अस्त्र तेहिं साँधा कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार॥ १९॥

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा। परतिहुँ बार कटकु संघारा॥
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ। नागपास बाँधेसि लै गयऊ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी। भव बंधन काटहिं नर ग्यानी॥
तासु दूत कि बंध तरु आवा। प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा॥
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए। कौतुक लागि सभाँ सब आए॥
दसमुख सभा दीखि कपि जाई। कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई॥
कर जोरें सुर दिसिप बिनीता। भृकुटि बिलोकत सकल सभीता॥
देखि प्रताप न कपि मन संका। जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका॥

दो०—कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद।
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद॥ २०॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेहि बन खीसा॥
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही। देखउँ अति असंक सठ तोही॥
मारे निसिचर केहिं अपराधा। कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा॥
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचति माया॥

जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा ॥
जा बल सीस धरत सहसानन। अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता। तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा। तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली ॥

दो०--जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥ २१ ॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई। सहसबाहु सन परी लराई ॥
समर बालि सन करि जसु पावा। सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥
खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा। कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥
सब कें देह परम प्रिय स्वामी। मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे। तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ॥
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥
बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी। भ्रम तजि भजहु भगत भयहारी ॥
जाकें डर अति काल डेराई। जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहें जानकी दीजै ॥

दो०--प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥ २२ ॥

राम चरन पंकज उर धरहू। लंकाँ अचल राजु तुम्ह करहू ॥
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका। तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥
राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥

मास दिवस महुँ नाथु न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ।।
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना । तुम्हहू तात कहत अब जाना ।।
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती ।।

दो०—जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ।। २७ ।।

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी ।।
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ।।
हरषे सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ।।
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा । कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ।।
मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि बारी ।।
चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ।।
तब मधुबन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ।।
रखवारे जब बरजन लागे । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ।।

दो०--जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज ।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ।। २८ ।।

जौं न होति सीता सुधि पाई । मधुबन के फल सकहिं कि खाई ।।
एहि बिधि मन बिचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ।।
आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ।।
पूँछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ।।
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राना ।।
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ।।
राम कपिन्ह जब आवत देखा । किएँ काजु मन हरष बिसेषा ।।

फटिक सिला बैठे द्वौ भाई। परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

दो०—प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज।
पूछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥ २९ ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया। जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
सोइ बिजई बिनई गुन सागर। तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥
प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥
पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥
सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥
कहहु तात केहि भाँति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की ॥

दो०—नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार. कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ॥ ३० ॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥
नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी ॥
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी ॥
अवगुन एक मोर मैं माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा। निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ॥
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥
नयन स्त्रवहिं जलु निज हित लागी। जरैं न पाव देह बिरहागी ॥
सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥

दो०--निमिष निमिष करुना निधि जाहिं कलप सम बीति ।
वेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुजबल खल दल जीति ।। ३१ ।।

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ।।
बचन कायँ मन मम गति जाही । सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ।।
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई । जब तब सुमिरन भजन न होई ।।
केतिक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ।।
सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ।।
प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ।।
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि बिचार मन माहीं ।।
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ।।

दो०--सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ।। ३२ ।।

बार बार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ।।
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ।।
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ।।
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ।।
कहु कपि रावन पालित लंका । केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ।।
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन बिगत अभिमाना ।।
साखामृग कै बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ।।
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बधि बिपिन उजारा ।।
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ।।

दो०--ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जापर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल ।। ३३ ।।

नाथ भगति अति सुखदायनी। देहु कृपा करि अनपायनी ।।
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी। एवमस्तु तब कहेउ भवानी ।।
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना। ताहि भजनु तजि भाव न आना ।।
यह संबाद जासु उर आवा। रघुपति चरन भगति सोई पावा ।।
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपि बृन्दा। जय जय जय कृपाल सुखकंदा ।।
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा। कहा चलैं कर करहु बनावा ।।
अब बिलंबु केहि कारन कीजे। तुरत कपिन्ह कहुँ आयसु दीजे ।।
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी। नभ तें भवन चले सुर हरषी ।।

दो०--कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ।
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ।। ३४ ।।

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा। गर्जहिं भालु महाबल कीसा ।।
देखी राम सकल कपि सेना। चितइ कृपा करि राजिव नैना ।।
राम कृपा बल पाइ कपिंदा। भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ।।
हरषि राम तब कीन्ह पयाना। सगुन भए सुंदर सुभ नाना ।।
जासु सकल मंगल मय कीती। तासु पयान सगुन यह नीती ।।
प्रभु पयान जाना बैदेहीं। फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं ।।
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई। असगुन भयउ रावनहि सोई ।।
चला कटकु को बरनैं पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा ।।
नख आयुध गिरि पादपधारी। चले गगन महि इच्छाचारी ।।
केहरिनाद भालु कपि करहीं। डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ।।

छं०--चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।
मन हरष सभ गंधर्ब सुर मुनि नाग किंनर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥ १ ॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई ।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ट कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥ २ ॥

दो०--एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥ ३५ ॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका । जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥
निज निज गृहँ सब करहिं बिचारा । नहिं निसिचर कुल केर उबारा ॥
जासु दूत बल बरनि न जाई । तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥
रहसि जोरि कर पति पग लागी । बोली बचन नीति रस पागी ॥
कंत करष हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥
समुझत जासु दूत कइ करनी । स्त्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बोलाई । पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई । सीता सीत निसा सम आई ॥
सुनहुँ नाथ सीता बिनु दीन्हें । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

दो०--राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक ।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक ॥ ३६ ॥

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी । बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥
सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥
जौं आवइ मर्कट कटकाई । जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा । तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥
मंदोदरी हृदयँ कर चिंता । भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥
बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई । सिंधु पार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू । ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं । नर बानर केहि लेखे माहीं ॥

दो०——सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥ ३७ ॥

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई । अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा । भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुसासन ॥
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता । मति अनुरूप कहउँ हित ताता ॥
जो आपन चाहै कल्याना । सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥
सो परनारि लिलार गोसाईं । तजउ चउथि के चंद कि नाईं ॥
चौदह भुवन एक पति होई । भूत द्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥
गुन सागर नागर नर जोऊ । अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

दो०——काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥ ३८ ॥

तात राम नहिं नर भूपाला । भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥

ब्रह्म अनामय अज भगवंता । ब्यापक अजित अनादि अनंता ।।
गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ।।
जन रंजन भंजन खल ब्राता । बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ।।
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा । प्रनतारति भंजन रघुनाथा ।।
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही । भजहु राम बिनु हेतु सनेही ।।
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ।।
जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ।।

दो०--बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस ।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ।। ३९(क) ।।
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ।। ३९(ख) ।।

माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु बचन सुनि अति सुख माना ।।
तात अनुज तव नीति बिभूषन । सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ।।
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहां हइ कोऊ ।।
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ।।
सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ।।
तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ।।
कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ।।

दो०--तात चरन गहि मागऊँ राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार ।। ४० ।।

बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी ।।

सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दो०--रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।
मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥ ४१ ॥

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं । आयूहीन भए सब तबहीं ॥
साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी ॥
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा । भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहउँ जाइ चरन जलजाता । अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जे पद परसि तरी रिषिनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुतां उर लाए । कपट कुरंग संग धर धाए ॥
हर उर सर सरोज पद जेई । अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई ॥

दो०--जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।
ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥ ४२ ॥

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥

ताहि राखि कपीस पहिं आए। समाचार सब ताहि सुनाए ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। आवा मिलन दसानन भाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा। कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाइ निसाचर माया। कामरूप केहि कारन आया ॥
भेद हमार लेन सठ आवा। राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी। मम पन सरनागत भयहारी ॥
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना। सरनागत बच्छल भगवाना ॥

दो०--सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि।
ते नर पाँवर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥ ४३ ॥

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू। आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥
पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥
जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई। मोरें सनमुख आव कि सोई ॥
निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥
भद लेन पठवा दससीसा। तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥
जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥
जौं सभीत आवा सरनाईं। रखिहउँ ताहि प्रान की नाईं ॥

दो०--उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥ ४४ ॥

सादर तेहि आगें करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता। नयनानंद दान के दाता ॥
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी। रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥

भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन ।।
सिंघ कंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन मन मोहा ।।
नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता ।।
नाथ दसानन कर मैं भ्राता। निसिचर बंस जनम सुर त्राता ।।
सहज पापप्रिय तामस देहा। जथा उलूकहि तम पर नेहा ।।

दो०—श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ।। ४५ ।।

अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ।।
दीन बचन सुनि प्रभुमन भावा। भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा ।।
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगत भय हारी ।।
कहु लंकेस सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ।।
खल मंडलीं बसहु दिनु राती। सखा धरम निबहइ केहि भाँती ।।
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती। अति नय निपुन न भाव अनीती ।।
बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ।।
अब पद देखि कुसल रघुराया। जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ।।

दो०—तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम ।। ४६ ।।

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना। लोभ मोह मच्छर मद माना ।।
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरें चाप सायक कटि भाथा ।।
ममता तरुन तमी अँधिआरी। राग द्वेष उलूक सुखकारी ।।
तब लगि बसति जीव मन माहीं। जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ।।
अब मैं कुसल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे ।।
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला। ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ।।

मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा। तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ॥
दो०--अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेब्य जुगल पद कंज ॥ ४७ ॥
सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ॥
जौं नर होइ चराचर द्रोही। आवै सभय सरन तकि मोही ॥
तजि मद मोह कपट छल नाना। करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥
जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥
सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥
समदरसी इच्छा कछु नाहीं। हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसें। लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें। धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥
दो०--सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ॥ ४८ ॥
सुनु लंकेस सकल गुन तोरें। तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥
राम बचन सुनि बानर जूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी। नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥
पद अंबुज गहि बारहिं बारा। हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥
सुनहु देव सचराचर स्वामी। प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रही। प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥
अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा। मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं। मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥

अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ।।

दो०––रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ।। ४९(क) ।।
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ।। ४९(ख) ।।

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ।।
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ।।
पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी । सर्बरूप सब रहित उदासी ।।
बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ।।
सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ।।
संकुल मकर उरग झष जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाँती ।।
कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक ।।
जद्यपि तदपि नीति असि गाई । बिनय करिअ सागर सन जाई ।।

दो०––प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ।। ५० ।।

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिअ दैव जौं होइ सहाई ।।
मंत्र न यह लछिमन मन भावा । राम बचन सुनि अति दुख पावा ।।
नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ।।
कादर मन कहुँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ।।
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा । ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ।।
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गए रघुराई ।।
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ।।
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । पाछें रावन दूत पठाए ।।

दो०—सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह।
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह॥ ५१॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ॥
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने। सकल बाँधि कपीस पहिं आने॥
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। अंग भंग करि पठवहु निसिचर॥
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए। बाँधि कटक चहु पास फिराए॥
बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे॥
जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीस कै आना॥
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए॥
रावन कर दीजहु यह पाती। लछिमन बचन बाचु कुलघाती॥

दो०—कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार।
सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार॥ ५२॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा। चले दूत बरनत गुन गाथा॥
कहत राम जसु लंकाँ आए। रावन चरन सीस तिन्ह नाए॥
बिहसि दसानन पूँछी बाता। कहसि न सुक आपनि कुसलाता॥
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी॥
करत राज लंका सठ त्यागी। होइहि जब कर कीट अभागी॥
पुनि कहु भालु कीस कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई॥
जिन्ह के जीवन कर रखवारा। भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा॥
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी। जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी॥

दो०—की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर।
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर॥ ५३॥

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें। मानहु कहा क्रोध तजि तैसें॥

मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥
रावन दूत हमहि सुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥
श्रवन नासिका काटैं लागे । राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥
पूँछिहु नाथ राम कटकाई । बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥
नाना बरन भालु कपि धारी । बिकटानन बिसाल भयकारी ॥
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा ॥
अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नाग बल बिपुल बिसाला ॥

दो०––द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बल रासि ॥ ५४ ॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं । तृन समान त्रैलोकहि गनहीं ॥
अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । पदुम अठारह जूथप बंदर ॥
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला । पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ॥
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका ॥

दो०––सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम ॥ ५५ ॥

राम तेज बल बुधि बिपुलाई । सेष सहस सत सकहिं न गाई ॥
सक सर एक सोषि सत सागर । तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥

सुनत बचन बिहसा दससीसा। जौं असि मति सहाय कृत कीसा ॥
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई। सागर सन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई। रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत बिभीषन जाकें। बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें ॥
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी। समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥
रामानुज दीन्ही यह पाती। नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन। सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

दो०--बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस।
राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्नु अज ईस ॥५६(क)॥
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृङ्ग।
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥५६(ख)॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई। कहत दसानन सबहि सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा। लघु तापस कर बाग बिलासा ॥
कह सुक नाथ सत्य सब बानी। समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा। नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ। जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही। उर अपराध न एकउ धरिही ॥
जनकसुता रघुनाथहि दीजे। एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥
जब तेहिं कहा देन बैदेही। चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥
नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ। कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥
करि प्रनामु निज कथा सुनाई। राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥
रिषि अगस्ति कीं साप भवानी। राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥
बंदि राम पद बारहिं बारा। मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा ॥

दो०---बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥ ५७ ॥

लछिमन बान सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ॥
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥
ममता रत सन ग्यान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी ॥
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा। ऊसर बीज बएँ फल जथा ॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा ॥
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥
मकर उरग झष गन अकुलाने। जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
कनक थार भरि मनि गन नाना। बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥

दो०---काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच ॥ ५८ ॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥
तव प्रेरित मायाँ उपजाए। सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई। सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ॥
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही। मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई। करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई ॥

दो०---सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥ ५९ ॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाईं रिषि आसिष पाई ॥

तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥
एहि सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघरासी ॥
सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥
देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छं०--निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ॥
यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥
सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना ।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

दो०--सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥ ६० ॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
पंचमः सोपानः समाप्तः ।

(सुन्दरकाण्ड समाप्त)

सुखपूर्वक प्राणायाम

लोम विलोम (विक्षेप दूर करने के लिए)

अपने ध्यान के कमरे में अपने इष्टदेवता के चित्र के सामने द्मासन अथवा सिद्धासन लगाकर बैठ जायें। दाहिने हाथ के अंगूठे नाक के दायें नासारन्ध्र को वन्द करें और वाएँ रन्ध्र से धीरे-धीरे म्बी साँस लें। इसके पश्चात् दाहिने हाथ की अनामिका और निष्ठा उंगलियों से दूसरा नासारन्ध्र भी वन्द कर दें और जितनी र तक सुगमतापूर्वक हो सके, साँस को रोके रक्खें। थोड़ी देर वाद गूठा हटाकर वहुत ही धीरे-धीरे दाहिने नासारन्ध्र से साँस छोड़ें। ह आधा प्राणायाम हुआ।

अव दाहिने नासारन्ध्र से साँस लें और पहले की तरह ही साँस कें और फिर वायें नासारन्ध्र से साँस छोड़ें। इन छः क्रियाओं से क प्राणायाम होता है। प्रातःकाल तथा सायंकाल में वीस प्राणायाम अभ्यास प्रारम्भ कीजिये। प्राणायाम में लिया गया श्वास 'पूरक', श्वास 'रेचक' तथा साँस को रोके रहना 'कुम्भक' कहलाता है। णायाम करते समय ऐसा भाव वनाये रखिये कि 'पूरक' करते समय ास के साथ करुणा, प्रेम, क्षमा, शान्ति, सुख आदि सारे दैवी गुण प में प्रवेश कर रहे हैं। और 'रेचक' के समय प्रश्वास के साथ काम, ध, लोभ आदि सारी आसुरी सम्पत्ति वाहर निकल रही है।

प्राणायाम करते समय 'गायत्री मन्त्र' का जाप कीजिये।

प्राणायाम सारे रोगों को दूर करता है, नाड़ियों को शुद्ध वनाता विक्षेप को दूर करता है, चित्त को स्थिर करता है। ब्रह्मचर्य पालन सहायता मिलती है तथा मूलाधार चक्र में प्रसुप्त कुण्डलिनी जगती

है। नाड़ियाँ शीघ्र ही व्यवस्थित होती हैं। आपको भूमि से ऊपर उठने की सिद्धि प्राप्त होती है।

श्वास-प्रश्वास के समय कोई आवाज नहीं होनी चाहिए। प्राणायाम के अभ्यास काल में आँखें बन्द रखनी चाहियें तथा एक प्राणायाम के समाप्त होने पर कुछ समय तक विश्राम लेना चाहिए। तीन बार लम्बी साँस खींचनी तथा छोड़नी चाहिए। भाव यह है कि किसी भी समय साँस घुटने का अनुभव नहीं होना चाहिए।

शनि देव वन्दना

ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तुते।
नमस्ते भव सर्पाय कृष्णाय नमोस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर, नमोस्तुते।
प्रसादं कुरु देवेश, दीनस्य प्रणतस्य च॥

अनुरोध

मेरा आपसे साग्रह अनुरोध है—आप दिन-रात भगवान् के पवित्र चिन्तन में ही अपने जीवन को लगा दो। सबको भूल जाओ। सारी ममता, सारी आसक्ति आकर टिक जाय एकमात्र भगवान् के श्री चरणों में ही। संसार के सारे पदार्थों से सदा विरक्ति और उपरति बनी रहे। दीन-दुखियों की सेवा करें, सब प्राणियों के प्रति सद्भाव रखें, और अपनी बुराई करने वाले से आप द्वेष-भावना ना रखें।

प्राप्ति स्थान
श्रीमती शक्ति देवी अमरनाथ
२१५-२१६ वासदेव नगर प्रताप नगर, दिल्ली-११०००७